International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(1): 28-30

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(1): 28-30
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-11-2016
Accepted: 11-12-2016

कैलाश चन्द्र भट्ट
पी0 एच0 डी0 (शोध छात्र) संस्कृत विभाग एस0 एस0 जे0 परिसर अल्मोड़ा कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल उत्तराखण्ड

Correspondence
कैलाश चन्द्र भट्ट
पी0 एच0 डी0 (शोध छात्र) संस्कृत विभाग एस0 एस0 जे0 परिसर अल्मोड़ा कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल उत्तराखण्ड

वेदों में पर्यावरण संरक्षण

कैलाश चन्द्र भट्ट

प्रस्तावना

मानव जाति का आदि ग्रन्थ वेद है।

विद् ज्ञाने धातु से निश्पन्न वेद शब्द का अर्थ ज्ञान होता है इस पर भी मनु ने 'सर्वज्ञानमयों हि सः' कहकर वेद को सभी प्रकार के ज्ञान से युक्त घोषित किया तात्पर्य यह है कि हमारे जीवन का कोई भी पक्ष ऐसा नहीं है जिसका दर्शन हमें वेद में न होता हो। तीनो लोक, चारों वर्ण, चारों आश्रम यहाँ तक कि भूत, भवत् (वर्तमान) और भविष्य का ज्ञान वेदों के द्वारा सम्भव है।

"चातुर्वर्ण्य त्रयोलोकाष्चत्वारष्चाश्रमाः पृथक्।
भूतं भव्यं भवश्यं च सर्व वेदात् प्रसिध्यति।।" 1

इसी सन्दर्भ में पर्यावरणीय शिक्षा भी हमारे प्राचीनतम वाङ्मय वेदों से ही आरम्भ होती है। जहाँ वेदों में पृथ्वी, जल, तेज वायु और आकाश इन पञ्च तत्वों को प्रदूशण से मुक्त बनाने के लिए अनेक विधि इनकी उपासना की गयी है।

पर्यावरण का अर्थः पर्यावरण शब्द परि+आवरण दो शब्दों से मिलकर बना है जहाँ परि का अर्थ है चारों ओर तथा आवरण का अर्थ है आच्छादित या ढका हुआ या घिरा हुआ।

विश्व का प्रत्येक प्राणी अपने चारों ओर के वातावरण पर आश्रित रहता है पर्यावरण की इस परिधि में वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी तथा समस्त दिशाएं, पर्वत, मेघ, वनस्पति पशु आदि समाहित हैं।

वैदिक पर्यावरण का अर्थः आदि ग्रन्थ वेदों में मानव जीवन के कल्याणार्थ पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने की बात कही है। वेद में विविध सूक्तों (पृथ्वी सूक्त, अग्नि सूक्त, वरूण सूक्त, आपः सूक्त) के माध्यम से शुद्ध हवा, शुद्ध भोजन पवित्र भूमि, एवं शुद्ध वातारण में जीवन जीने की बात कही है।

वैदिक पर्यावरण का अर्थ वेद में पर्यावरण सम्बन्धित बातों से है। वैदिक पर्यावरण के अर्थ को हम निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर समझ सकते हैं। निरोगी काया एवं दीर्घ अवस्था (दीर्घायु) हेतु नित्य प्राणायाम, योग शुद्ध हवा का सेवन करना। सात्विक भोजन ग्रहण करना। सात्विक विचारों को अपने भीतर लाना। वृक्षारोपण समय–समय पर करते रहना। जड़ी बूटियों एवं गौ –घृत से आहुति देना।

वेद में पर्यावरण संरक्षण– हमारे वैदिक वाङ्मय में हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया गया है। पर्यावरण के प्रति प्रत्येक मानव को सचेत किया गया है। पर्यावरण के मूल घटक पञ्च तत्वों में देवत्व का भी दर्शन कराया गया है।

पञ्चतत्वों (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) को प्रदूषण रहित बनाने के लिए अनेक विद्य इनकी उपासना करके इनके संरक्षण के लिए मानव को पेरित किया है।

1. पृथ्वी तत्वः अथर्ववेद संहिता में पृथ्वी को माता कहकर पुकारा है तथा मानव को उसका पुत्र कहा है।

यन्तेमध्यं पृथिवी यच्च नभस्य, यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।
तसु नो धेहयभि नः पवस्व, माता भूमिः पुत्रों अहं पृथिव्याः।। 2

अर्थात् पुत्र जैसे अपने माता पिता की रक्षा यत्न पूर्वक करता है उसी प्रकार धरती रूपी माता की भी रक्षा मानव को यत्न पूर्वक करनी चाहिए।

अथर्ववेद पुनः इसके अधिक दोहन न करने के लिए संकेत देता है। आज का मानव हर परिस्थिति में लाभ पाना चाहता है। वह चाहता है कि धरती का अधिक से अधिक दोहन कर लिया जाये इसके भीतर या बाहर जो कुछ भी अमूल्य वस्तुएं हैं। उन सबको धरती से छीन लिया जाये।

परन्तु अथर्ववेद की ऋचाएं पृथ्वी के दोहन के लिए निषेध करती हैं।

शिला भूमि रश्मा पांसु सा भूमि संधृता घृता।
तस्यै हिरण्य वक्षसे पृथिव्या आकरं नमः।। 3

शिला, भूमि धूल और पत्थर इनके रूपों को पृथ्वी धारण करती है। भलि प्रकार सुवर्ण की खान को अपने वक्षः स्थल में धारण करने वाली पृथ्वी को मैं प्रणाम करता हूँ।
यजुर्वेद में कहा गया है कि पृथ्वी को दृढ़ करो तथा इसकी हिंसा न करो –पृथिवीं दृढ़ पृथिवी मां हिंसी,
वृक्षों के काटे जाने से पृथ्वी की दृढ़ता में कमी आ जाती है। वृक्षों के काटे जाने पर भी वेदों ने निषेध किया है चूंकि वृक्ष भी पर्यावरण संरक्षण की भूमिका निभाते हैं। यहाँ तक कि वृक्षों की रक्षा के लिए वृक्षों को हमारी आस्था और संस्कृति से जोड़कर उनमें दैवत्व का भान कराया है।

यथाः पीपल वृक्ष के लिए कहा गया है :–

मूलतों ब्रह्म रूपाय मध्यतो विष्णु रूपिणे।
अग्रतों तो शिव रूपाय वृक्ष राजाय नमोस्तुते।।
कुश के लिए भवान स्वयं कहते हैंः– मम रोमाः समुद्भवा।
कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुश मध्ये जनार्दनः।
कुशाग्रे शंकरो देवा त्रयो देवा कुशे स्मृताः।।

भगवान कहते हैं कुश मेरे रोम से उत्पन्न है कुश के मूल में ब्रह्मा मध्य में विष्णु तथा अग्र भाग में भगवान शिव का निवास है।
वेद के अनुसार वृक्ष और वनस्पतियों पर्यावरण संरक्षण के लिए परम आवश्यक हैं, वृक्षों को देवरूप मानकर वैदिक ऋषियों ने इन वृक्षों की अनेक प्रकार से स्तुति की है।

नमों हिरण्य वाहवे सेनान्ये दिषाञचपतये नमो।
नमों वृक्षेभयो हरिकेषेभ्यः पषूनाम्पयते नमो नमः।।
नमो रोहितायस्थ पतये वृक्षाणाम्पतये नमो नमः 4
भुवन्तये वारि वस्कृतायौशधी नाम्पतये नमो नमो।। 5

गीता में भगवान स्वयं कहते है कि "अश्वत्थ" सर्व वृक्षाणाम्" वृक्षों में मैं पीपल वृक्ष हूँ। वेदों में वृक्ष लगाना परम आवश्यक मानकर वृक्षारोपण का स्पष्ट आदेश दिया है। "वनस्पति वन आस्थापयध्यम्" अतः वृक्षों को नष्ट करना ही पृथ्वी माता की हिंसा करना है। उसके हृदय पर प्रहार करने जैसा है। वेदों को आदर्श मानकर हमें पृथ्वी तत्व का संरक्षण करना है।

2. जल तत्वः "जल ही जीवन है" जल जीवन प्रमुख आधार है इस धारण को ध्यान में रखते हुए वैदिक वाड्.मय में भी स्वच्छ जल के प्रयोग की बात कही है। चूंकि जल के अशुद्ध होने से शरीर में कप, वात, पित्त की स्थिति (अनुपात) बिगड़ती है जिससे स्वास्थ्य बिगड़ता है। स्वच्छ जल में अमृत एवं औषधी का निवास है।
जल की सुरक्षा एवं जल के संरक्षण से ही हमें स्वच्छ जल मिल सकता है। ऋग्वेद में कहा हैः–

आपोहिश्ठा मयोभुवस्था न ऊर्जेदधातन। 6

जल के द्वारा समस्त रोगों एवं कश्टों का निवारण किया जा सकता है।
जल ही सम्पूर्ण जगत/संसार की प्रतिष्ठा है।
"आपो हि सर्वस्व जगतः प्रतिष्ठा"
वैदिक ऋषियों का मानना है कि जल से ऊर्जा उत्पन्न होती है।
"षन्नो देवी रभिश्टय आपो भवन्तु पीतये, षंयोरिभि स्रवन्तु नः"
अथर्ववेद में सभी प्रकार के जल की स्वच्छता एवं सुरक्षा बनाये रखने के लिए प्रार्थना की है।

या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति
खनित्रिमा उतवा स्वयं जाः
समुद्रार्था या षुचयः पवकास्।
ता आपो देवीरिह मामवन्तु।। 7

वर्षा का जल, कुँए का जल, समुद्र का जल और धरती से स्वयं प्रस्फुटित जल हम सभी के लिए कल्याणकारी है।
पर्यावरण के घटक जल को प्रदूषण से रोकने के लिए वैदिक ऋषियों ने जल को भी देवत्व की संज्ञा दी,
जल ही स्वयं ईश्वर है ऐसा कहकर सामान्य मानव के अन्तः करण मे भी जल के लिए आदर सम्मान एवं सुरक्षा उत्पन्न करने के प्रयास किये।

श्रीमद् भगवत् गीता में जल को भगवान ने स्वयं अपना स्वरूप बताया हैः– "सरसामस्मि सागरः "स्त्रोतसामस्मि जाहनवी"। 8

3. अग्नि तत्व (तेज): वैदिक परम्परा के अनुसार पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए पर्यावरण के घटक अग्नि तत्व की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। जिस प्रकार से हमारा शरीर तेज तत्व के बिना सार हीन है उसी प्रकार बाह्य जगत भी अग्नि तत्व के बिना उदासीन है। अग्नि तत्व का पर्यावरण के शोधन में विशेष योगदान है।
वैदिक ऋषियों ने अग्नि को माध्यम बनाकर यज्ञ की विद्याओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए मानव को वेद के माध्यम से सचेत किया है।
अग्नि में दी हुई आहुति वायुमण्डल में व्याप्त रोगाणुओं, विषाणुओं को दूर करती है।

अग्नि सूक्त में अग्नि के लिए प्रार्थना की गयी है–
स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनों भव सचस्वा नः स्वस्तये।।
वैदिक ऋशियों ने अग्नि को देवता मानकर शुद्ध एवं स्वच्छ अग्नि से प्रार्थन की हैः–

अग्निर्देवता वातो देवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता। 9
श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां वुद्धि बलं श्रियम्।
आयुश्यं तेज आरोग्यं देहि में हव्यवाहनम्।।

अग्नि से ऋषियों ने प्रार्थना की है किः– हे अग्ने!
श्रद्धा, प्रज्ञा, यश, विद्या, बुद्धि बल, लक्ष्मी, दीर्घायु तेज ओज, एवं आरोग्यता प्रदान कर हमारा कल्याण करें।
अग्नि में यज्ञ करने से वेद में यज्ञ द्वारा जल प्राप्त करने की बात कही गयी है।

पयः पृथिव्यां पयऽओशधीशु पयो दिव्यन्तरिक्षे
पयोधाः पयस्वतीः प्रदिषः सन्तु महयम्,। 10

नदी, निर्झर, सरोवर, कुआं, वनस्पतियों में अन्तरिक्ष में तथा द्युलोक इन तीनों स्थानों (स्त्रोतों) से यज्ञ द्वारा जल प्राप्त किया जा सकता है।
शपपथ ब्राह्मण में यज्ञ को साक्षात् विष्णु कहा गया है।

यज्ञों वै विष्णुः 11

गीता में यज्ञ से ही प्राणियों की रक्षा तथा पर्यावरण संरक्षण के संकेत मिलते है।

यज्ञात् भवति पार्थन्यः पर्जन्यादन सम्भवः
अन्नादभवति भूतानि यज्ञ कर्म समुद्रभवः।। 12

यज्ञ से ही पर्यावरण सन्तुलन के लिए वर्षा होती है।
वर्शा से अन्न उत्पन्न होता है तथा अन्न से प्राणियों की रक्षा होती है।
अतः यज्ञ कर्म परम आवश्यक है और यज्ञ अग्नि के बिना सम्भवन नहीं है। इसलिए पर्यावरण को अभिरक्षा के लिए अग्नि तत्व की परम प्रधानता है।

वायु तत्वः वायु का पर्यावरण तथा हमारे जीवन में घनिष्ठ सम्बन्ध है। क्योंकि वायु द्वारा ही श्वास– प्रश्वास कि क्रिया सम्भव होती है। ऋग्वेद में वायु के लिए 'विश्वभेशज' शब्द का प्रयोग किया है।

आ वात वाहि भेशजं विवात वाहि यद्पः
त्वं हि विश्व भेशजो दिवानां दूत ईयसे।। 13

उपरोक्त मन्त्र में वायु को 'विश्वभेशज' कहकर उससे दूषित वायु को दूर कर शुद्ध वायु प्रवाहित करने की कामना की गयी है।
वैदिक ऋषियों को यह भली भाँति याद था कि शुद्ध वायु हृदय के लिए शान्तिदायक सुख कारक एवं आयुवर्द्धक है।

वात आ वातु भेशज शम्भु मयोभु नो हृदे
प्रण आयूशि तारिशत्

मनुश्य व पशुओं के मल मूत्र, फैक्ट्रियों से निकले धुँए से वातावरण दूषित होता है। इसमें वायु मण्डल में ऑक्सीजन की कमी होकर वह कार्बन से युक्त गैस जैसे कार्बनडाई ऑक्साईड से युक्त होकर ढक जाता है। इसके लिए वेद ने प्रत्येक गृहस्थ को वायु को शुद्ध एवं स्वच्छ बनाने के लिए प्रेरित किया हैः– कि प्रत्येक गृहस्थ को यज्ञ करना चाहिए।
यज्ञ क्रिया के द्वारा प्रयुक्त शाकल्य (घृत, जड़ी, बूटियाँ, औषधियां तिल आदि) से प्रचुर मात्रा में ऐसी गैसें निकलती है।
जो वायुमण्डल में फैली प्रदूषित वायु को दूर कर शुद्ध भेषज वायु का प्रसार करती है। वायु में अनेकों प्रकार की गैंसे हैं। वेद में गैसों के परिभाशि कनाम इस प्रकार हैः–
हाईड्रोजन –नारद वायु
कार्बनडाई ऑक्साइड –रूद्ध नीलकंठ वायु
नाईट्रोजन –रूप ज्योति
ऑक्सीजन –सोम वायु

इनमें सबसे महत्वपूर्ण ऑक्सीजन गैस है। वायुमंडल में जब ऑक्सीजन की कमी होती है तभी वायुमण्डल प्रदूषित होता है। इसलिए वेद में शुद्ध वायु को भी देवता कहकर प्रणाम किया गया है कि आप शुद्ध रूप से प्रवाहित होकर हमारा कल्याण करें।

आकाश तत्वः पर्यावरण संरक्षण में आकाश की भूमिका भी सराहनीय है। पर्यावरण की रक्षा के लिए आकाश में व्याप्त ओजोन परत की रक्षा होना परम आवश्यक है। तथा आकाश में व्याप्त गैंसों के अनुपात में सन्तुलन भी आवश्यक है। इनके असन्तुलन से पर्यावरण प्रदूषित होने लगता है।
आधुनिक समय में भूमण्डल पर वाहनों उद्योगों से निकलने वाली असहनीय ध्वनि सम्पूर्ण आकाश में व्याप्त होकर आकाश में असन्तुलन पैदा करती है। जिसे ध्वनि प्रदूषण कहा जा सकता है।
प्राचीन वैदिक ऋषि ध्वनि प्रदूषण के लिए भी सजग थे।

भद्रं कर्णेभिः श्रणुयाम देवा भंद्र पष्येमाक्षभिर्ज्जत्राः।
स्थिरे रंगैस्तुश्टुवा8 षस्तनू भिर्व्यसेमहि देवहितं यदायुः।। 14

उपरोक्त मन्त्र में प्रार्थना की गई कि हे प्रभो हम शुभ सुने सर्वत्र सुख देखें, बोलें भी मधुर।
अर्थात उपरोक्त मन्त्र से प्रेरणा मिलती है कि हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक भयानक ऊँचे शब्दों, घोर गर्जना, अधिक ध्वनि वाले शब्दों या यन्त्रों का प्रयोग नहीं करना चाहिए अन्यथा शून्य आकाश में प्रदूषण का आधिक्य होने से पर्यावरणीय समस्याएं बढ़ती रहेंगी।
वैदिक ऋषियों ने आकाश में व्याप्त प्रदूषण को नष्ट करने के उद्देश्य से आकाश को भी देवता माना है।
अन्तरिक्ष के पर्यावरण की रक्षा हेतु ऋषियों ने अन्तरिक्ष में विद्यमान ग्रह, नक्षत्र, तारे, सूर्य तथा चन्द्रमा आदि नवग्रहों को भी देवता माना है।
वैदिक शान्तिपाठ में पर्यावरण को सुरक्षित कर सुखमय एवं शान्तिमय जीवन जीने की बात कही है।
द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष 8 शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोशधयः शान्तिः।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिब्रह्मशान्तिः
सर्व 8 शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।। 15

निष्कर्षः उपरोक्त समस्त तथ्यों को जानने के बाद हम यह कह सकते हैं कि पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए हमें एक बार पुनः वेदों की शरण में जाना होगा। वेद तक पुनः लौटना होगा आधुनिकीकरण के इस युग में मानव अपने अस्तित्व को भूल चुका है मानव का अस्तित्व वेद से है। वेद ही हमारा आदि गन्थ है तथा पर्यावरण संरक्षण की बात वेद ने ही हमारे समक्ष सर्वप्रथम रखी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मनुस्मृति
2. अथर्ववेद
3. अथर्ववेद
4. यजुर्वेद
5. भगवद्गीता
6. ऋगवेद
7. अथर्ववेद
8. भगवदगीता
9. यजुर्वेद
10. यजुर्वेद
11. शपपथ व्राह्मण
12. भगवद्गीता
13. ऋग्वेद
14. यजुर्वेद
15. यजुर्वेद